भजन

शेरपुर वाले तेरी नजरे करम हो जाए
शामे गम अपनी भी
खुशियों की सहर हो जाए

1–बिगड़ी बन जाएगी और रंज भी मिट जाएगें
मेहरबानी जो तेरी हमपे अगर हो जाए

2–तेरी रहमत के दिलोजान से तलबगार है हम
और क्या चाहिये रहमत जो तेरी हो जाए

3–हम भी बन्दे है तेरे अपने कोई गैर नही
चाहे थोड़ा ही सही कुछ तो इधर हो जाए